कछपुरा ब्रिज अब कहलाएगा 'सरदार वल्लभ भाई पटेल सेतु'

जबलपुर को मिली नई पहचान : मुख्यमंत्री ने किया 'लौह पुरुष' की प्रतिमा का अनावरण

जबलपुर। संस्कारधानी जबलपुर के विकास और सम्मान में आज एक नया स्वर्णिम अध्याय जुड़ गया। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने विजय नगर सरदार वल्लभ भाई पटेल पार्क परिसर में एक गरिमामयी समारोह के दौरान भारत के 'लौह पुरुष' सरदार वल्लभ भाई पटेल की भव्य प्रतिमा का अनावरण किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने न केवल सरदार पटेल के योगदान को नमन किया, बल्कि शहर को एक बड़ी सौगात देते हुए महत्वपूर्ण घोषणा भी की।

समारोह को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि सरदार पटेल ने देश को एकता के सूत्र में पिरोने का जो महान कार्य किया, वह सदियों तक हमें प्रेरणा देता रहेगा। उनकी स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए मुख्यमंत्री ने घोषणा की कि जबलपुर का कछपुरा ब्रिज अब 'सरदार वल्लभ भाई पटेल सेतु' के नाम से जाना जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा, "यह सेतु केवल दो रास्तों को ही नहीं जोड़ेगा, बल्कि सरदार पटेल के विचारों और उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति की याद भी दिलाता रहेगा।"

महापौर ने जताया आभार

इस ऐतिहासिक निर्णय और प्रतिमा अनावरण के लिए नगर पालिक निगम जबलपुर के महापौर जगत बहादुर सिंह 'अन्नू' ने मुख्यमंत्री जी के प्रति आभार व्यक्त किया। महापौर ने कहा कि यह निर्णय शहर की जनता की भावनाओं का सम्मान है। सरदार पटेल सेतु के नामकरण से नई पीढ़ी को उनके महान व्यक्तित्व के बारे में जानने की प्रेरणा मिलेगी। मुख्यमंत्री के नेतृत्व में जबलपुर विकास की नई ऊंचाइयों को छू रहा है।

2 किमी जर्जर नहर, प्यासे खेत और अफसरों की चुप्पी, जवाबदेही पर सवाल

कसही की कराहती नहर : 'जीवनरेखा' बनी किसानों की बेड़ी

पनागर। बरगी हिल्स से निकलकर खेतों की प्यास बुझाने वाली कसही नहर आज खुद बदहाली का शिकार है। ग्राम पंचायत कसही, पनागर में वीरांगना रानी अवंती बाई लोधी सागर परियोजना के अंतर्गत बनी यह नहर करीब 2 किलोमीटर तक जर्जर हालत में है। जगह-जगह दरारें, उखड़ी लाइनिंग और भारी रिसाव के कारण पानी खेतों तक पहुंचने से पहले ही जमीन में समा जा रहा है। किसानों का कहना है कि वर्षों से न तो नहर की समुचित मरम्मत हुई और न ही ईमानदार निरीक्षण। परिणामस्वरूप फसल की रोपाई प्रभावित हो रही है, खेत सूखे पड़े हैं और किसान महंगे डीजल व बिजली से ट्यूबवेल चलाने को मजबूर हैं। ग्रामीणों ने नहर निर्माण और रखरखाव में घटिया गुणवत्ता, ठेकेदार-अधिकारी मिलीभगत और कागजी निरीक्षण के आरोप लगाए हैं। शिकायतें जनप्रतिनिधियों तक पहुंचीं, लेकिन अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। पनागर कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सम्मति सैनी ने आरोप लगाया कि नहर की बदहाली के पीछे अधिकारियों और ठेकेदारों की मिलीभगत है, जिससे शासन का पैसा बर्बाद हो रहा है। वहीं किसानों का कहना है कि संबंधित इंजीनियर पत्रकारों और ग्रामीणों के सवालों से बचते नजर आ रहे हैं, जिससे संदेह और गहरा गया है। किसानों ने मांग की है कि नहर का उच्चस्तरीय तकनीकी निरीक्षण, सभी रिसाव बिंदुओं की पहचान, आपात मरम्मत के साथ पूरी री-लाइनिंग, दोषियों पर कार्रवाई और खर्च की सामाजिक ऑडिट कराई जाए। साथ ही फसल सीजन में वैकल्पिक जल व्यवस्था सुनिश्चित करने की भी मांग की गई है। किसानों का कहना है कि वीरांगना रानी अवंती बाई के नाम पर बनी यह परियोजना उनके लिए वरदान होनी चाहिए थी, लेकिन आज वही नहर उनके लिए सबसे बड़ी परेशानी बन गई है।

रोग नियंत्रण से उत्पादन वृद्धि तक का मत्स्य पालकों को मिला आधुनिक ज्ञान

पनागर। ग्राम छत्तरपुर में मत्स्य पालकों के लिए एकदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। जिला मत्स्य विभाग जबलपुर के मार्गदर्शन में रिलायंस फाउंडेशन द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम का उद्देश्य वैज्ञानिक पद्धति से मत्स्य पालन कर उत्पादन बढ़ाना तथा रोग नियंत्रण की प्रभावी जानकारी देना रहा। प्रशिक्षण में मत्स्य महाविद्यालय के विशेषज्ञ अक्षय गौतम ने तालाब प्रबंधन, जल के पीएच संतुलन, हरिकाई (एल्गी) नियंत्रण और रोग रोकथाम पर व्यावहारिक जानकारी दी। उन्होंने बताया कि प्रति एकड़ लगभग 200 किलोग्राम चूने का उपयोग तालाब की सेहत सुधारने और मछलियों को रोगों से बचाने में सहायक है। मछलियों के प्रत्यक्ष निरीक्षण के माध्यम से रोगों की पहचान और उपचार की जानकारी भी दी गई। रिलायंस फाउंडेशन के अनिल रैदास ने बताया कि ऑडियो-वीडियो कॉन्फ्रेंस, व्हाट्सएप ग्रुप और यूट्यूब जैसे डिजिटल माध्यमों से किसानों को समय पर तकनीकी सलाह उपलब्ध कराई जाएगी। कार्यक्रम में ग्राम सरपंच दुखीराम, मछुआ सहकारी समिति अध्यक्ष गोलु बर्मन, समिति सदस्य, किसान एवं महिला दीदियों की सक्रिय सहभागिता रही। मत्स्य पालकों ने इस प्रशिक्षण को आत्मनिर्भर मत्स्य पालन की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताया।

वानिकी विभाग के विभागाध्यक्ष बनाएं गए डॉ. अजय खरे

जबलपुर। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर के कुलपति डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा की अनुशंसा पर कृषि महाविद्यालय, जबलपुर के वानिकी विभाग के विभागाध्यक्ष एवं आचार्य डॉ. अजय कुमार खरे बनाएं गए हैं। आपने 1988 से विश्वविद्यालय की सेवा प्रारंभकी। विश्वविद्यालय सेवाकाल में आपने छिंदवाड़ा शहडोल, मंण्डला, पन्ना में अपनी सेवाएं प्रदान की। इसके साथ ही आप उपलेखानियंत्रक पद को भी सुशोभित कर रहे हैं। आपने विश्वविद्यालय की विभिन्न समितियों में कार्य किये हैं साथ ही आपने 4 परियोजनाओं सहित कार्बन पूल जैसे महत्वपूर्ण प्राजेक्ट में कार्य कर अपनी एक अलग पहचान बनाई है। आपके 40 से ज्यादा शोध पत्र, 5 बुक चेप्टर एवं कई तकनीकी बुलेटिन आदि साहित्य प्रकाशित हो चुके हैं।

वेतन व गैलरी अलाउंस की मांग को लेकर कर्मचारियों का हल्ला बोल

जबलपुर। बरगी हिल्स स्थित नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण कार्यालय में बुधवार को मध्य प्रदेश लघु वेतन कर्मचारी संघ के पदाधिकारियों ने प्रशासन व शासन के नाम ज्ञापन सौंपकर वेतन और गैलरी अलाउंस की मांग उठाई।

संघ के संभागीय प्रकोष्ठ अध्यक्ष दिवेंद्र पटेल ने बताया कि मुख्य अभियंता, रानी अवंती बाई सागर परियोजना एवं अपर नर्मदा जोन से संबंधित दो सूत्रीय मांगों को लेकर ज्ञापन सौंपा गया है। उन्होंने कहा कि स्थायी कर्मचारियों को आवंटन के अभाव में पिछले तीन माह से वेतन नहीं मिला है, वहीं डैम में कार्यरत कर्मचारियों को पिछले पांच माह से गैलरी अलाउंस का भुगतान नहीं किया गया है। संघ ने मांग की है कि दोनों मुद्दों पर शीघ्र समाधान किया जाए, अन्यथा आने वाले समय में वृहद् आंदोलन किया जाएगा। ज्ञापन सौंपने के दौरान संभागीय सलाहकार एवं प्रकोष्ठ मार्गदर्शक वैद्यनाथन अय्यर सहित शंकर वानखेडे, संतोष पटेल, शिवनारायण साहू, तीरथ प्रसाद यादव, राजेंद्र यादव, विशाल यादव, शैलेंद्र जैन, संतराम यादव, चतरू प्रसाद यादव, दिनेश गढ़वाल, पुरुषोत्तम यादव, भीकम सिंह, दिनेश सोनी, दौलत सतनामी सहित अन्य पदाधिकारी व कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

शिरडी कोपर गांव में क्रिकेट मुकाबला: मदन क्रिकेट अकादमी की शानदार जीत

जबलपुर। शिरडी कोपर गांव में आत्मा मलिक एकेडमी द्वारा आयोजित क्रिकेट मुकाबले में मदन क्रिकेट अकादमी, जबलपुर ने महादेवी क्रिकेट अकादमी, मुंबई को एकतरफा मुकाबले में पराजित किया। मैच में पहले बल्लेबाजी करते हुए मदन क्रिकेट अकादमी ने निर्धारित ओवरों में 144 रन बनाए। लक्ष्य का पीछा करने उतरी महादेवी क्रिकेट अकादमी की टीम मदन अकादमी के गेंदबाजों के सामने टिक नहीं सकी और पूरी टीम मात्र 52 रन पर ऑलआउट हो गई। इस जीत में करण बुधवानी का प्रदर्शन निर्णायक रहा। उन्होंने शानदार गेंदबाजी करते हुए 6 विकेट झटके और उन्हें मैन ऑफ द मैच घोषित किया गया। मैच के बाद मदन क्रिकेट अकादमी के खिलाड़ियों व प्रबंधन में खुशी का माहौल रहा। स्थानीय क्रिकेट प्रेमियों ने भी खिलाड़ियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन की जमकर सराहना की।

सिवनी मालवा सेमीफाइनल में पहुंचने वाली दूसरी टीम बनी

मझौली। श्री विष्णु बाराह कप अखिल भारतीय लेदर बॉल क्रिकेट टूर्नामेंट 2025-26 के दूसरे क्वार्टर फाइनल में सिवनी मालवा ने बीसीसीएन नागौद को हराकर सेमीफाइनल में प्रवेश किया। सिवनी मालवा ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 9 विकेट पर 182 रन बनाए। सलामी बल्लेबाज माधव शर्मा ने शानदार 71 रन बनाए, जबकि गौतम ने 34 और लव दुबे ने 24 रनों का योगदान दिया। नागौद की ओर से सागर ने 3 विकेट, जबकि नीलेश और आकर्ष ने 2-2 विकेट लिए। लक्ष्य का पीछा करते हुए नागौद की टीम शुरुआत में लड़खड़ा गई और 40 रन पर 3 विकेट गिर गए। इसके बाद अर्पित और शाहबाज के बीच 67 रनों की साझेदारी हुई, लेकिन सिवनी मालवा के कप्तान अभिनव काजले (4 विकेट) और अर्सलान रिजवी (3 विकेट) की घातक गेंदबाजी के सामने नागौद की पूरी टीम 144 रन पर सिमट गई। शानदार बल्लेबाजी के लिए माधव शर्मा को मैन ऑफ द मैच चुना गया। मैच के अंपायर अनुराग दुबे और राहुल जैन रहे। प्रतियोगिता का अगला मुकाबला कल दोपहर 12 बजे नेशनल क्लब और झांसी के बीच खेला जाएगा।

15 साल पुराने अगरबत्ती कारखाने में लगी आग, 3 मशीनें जलकर खाक

पनागर। नए वर्ष की शुरुआत में पनागर क्षेत्र के ग्राम मनियारी खुर्द स्थित एक अगरबत्ती कारखाने में भीषण आग लगने की घटना सामने आई। 31 दिसंबर की रात करीब 4 बजे शॉर्ट सर्किट से लगी आग में लगभग 10 लाख रुपये का कच्चा माल जलकर खाक हो गया। जानकारी के अनुसार, 15 साल से संचालित इस कारखाने में अगरबत्ती निर्माण की तीन मशीनें, कोयला, चंदन सहित अन्य सामग्री पूरी तरह नष्ट हो गई। आग की सूचना कारखाना संचालक विकास पटेल को उनके रिश्तेदार आनंद पटेल ने दी, जिन्होंने रात में खेत से लौटते समय आग की लपटें देखीं। परिजनों द्वारा आग बुझाने का प्रयास किया गया, लेकिन आग तेज होने के कारण सफलता नहीं मिली। सूचना पर पहुंची फायर ब्रिगेड ने करीब 30 मिनट में आग पर काबू पाया। घटना की शिकायत पनागर थाने में दर्ज कराई गई है। पुलिस आग लगने के कारणों की जांच कर रही है।

10 हजार पौधे लगाने और संरक्षण का लिया संकल्प

पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए विधायक अशोक रोहाणी ने पौधारोपण कर किया नववर्ष का आगाज

जबलपुर। नववर्ष के अवसर पर केंट विधानसभा क्षेत्र के विधायक अशोक रोहाणी ने पौधारोपण कर नए साल की शुरुआत करते हुए पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। इस अवसर पर उन्होंने वर्षभर में 10 हजार पौधे लगाने और उनके संरक्षण का संकल्प लिया। कार्यक्रम में डॉ. अजय वाधवानी, अध्यक्ष मानव अधिकार एवं अपराध नियंत्रण संगठन विशेष रूप से उपस्थित रहे। उन्होंने भी विधायक रोहाणी के साथ 10 हजार पौधे लगाने का संकल्प लेते हुए कहा कि पर्यावरण संरक्षण मानव जीवन और मानव अधिकारों का अभिन्न हिस्सा है। विधायक अशोक रोहाणी ने कहा कि बढ़ते प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन के समय में पौधारोपण भविष्य को सुरक्षित रखने का सबसे प्रभावी माध्यम है। कार्यक्रम में मौजूद नागरिकों और कार्यकर्ताओं ने भी पौधारोपण कर हरित पर्यावरण का संकल्प लिया। इस अवसर पर एड. आशीष त्रिपाठी, एड. भावना निगम, आशीष राव, डॉ. अभिषेक जैन, अजय चौहान सहित अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। यह पहल पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाने और आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ वातावरण देने की दिशा में एक सराहनीय कदम मानी जा रही है।

आयुक्त के साथ जनसंगठनों की हुई बैठक

कठौंदा डॉग शेल्टर का विस्तारीकरण जल्द होगा पूरा

हरिभूमि जबलपुर।

शहर में बढ़ती आवारा श्वानों की समस्या और डॉग बाइट की घटनाओं को लेकर नगर निगम आयुक्त रामप्रकाश अहिरवार के साथ जनसंगठनों और श्वान प्रेमियों की अहम बैठक आयोजित की गई। बैठक में आयुक्त ने जानकारी दी कि कठौंदा स्थित डॉग शेल्टर के विस्तारीकरण का कार्य आगामी कुछ ही महीनों में पूरा कर लिया जाएगा। इसके साथ ही शहर में रोजाना की जाने वाली श्वान नसबंदी की संख्या को बढ़ाकर 20 से 25 प्रतिदिन कर दिया गया है। आयुक्त अहिरवार ने यह भी निर्देश दिए कि श्वान प्रेमियों और सामाजिक संगठनों की एक अलग बैठक शीघ्र आयोजित की जाए, ताकि जमीनी स्तर पर आ रही समस्याओं और उनके व्यावहारिक समाधान पर विस्तार से चर्चा की जा सके।

बैठक में मौजूद डॉ. पीजी नाजपांडे ने कहा कि आवारा श्वानों को स्कूलों, अस्पतालों, बस स्टैंड या कार्यालय परिसरों से हटाया नहीं गया है, जबकि इन संवेदनशील स्थानों पर डॉग बाइट की घटनाएं

लगातार बढ़ रही हैं। उन्होंने कहा कि यह स्थिति बेहद चिंताजनक है और यदि समय रहते प्रभावी कदम नहीं उठाए गए तो हालात और गंभीर हो सकते हैं। डॉ. नाजपांडे ने कहा कि नसबंदी अभियान सराहनीय है, लेकिन वर्तमान स्थिति को देखते हुए इसकी गति और दायरा दोनों बढ़ाने की जरूरत है, साथ ही निगरानी और फॉलोअप भी अनिवार्य होना चाहिए।

महापौर की घोषणा पर सवाल

बैठक में महापौर की पूर्व घोषणा को लेकर भी सवाल उठाए गए। जनसंगठनों ने बताया कि 22 सितंबर को महापौर द्वारा स्ट्रीट डॉग की समस्या को लेकर एक सेंट्रल कमेटी गठित करने और शीघ्र बैठक बुलाने की घोषणा की गई थी, लेकिन चार महीने बीत जाने के बावजूद इस दिशा में कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई। संगठनों ने इसे गंभीर लापरवाही बताते हुए कहा कि केवल घोषणाओं से समस्या का समाधान नहीं होगा, बल्कि जमीनी स्तर पर काम और नियमित मॉनिटरिंग जरूरी है।

बैठक में यह भी सुझाव दिया गया कि शहर के अलग-अलग वार्डों में डॉग बाइट के मामलों का डेटा सार्वजनिक किया जाए, नसबंदी के बाद श्वानों की निगरानी की व्यवस्था बने और नागरिकों को भी जागरूक किया जाए कि वे श्वानों के साथ अमानवीय व्यवहार न करें, क्योंकि इससे आक्रामकता बढ़ती है।

बैठक में ये रहे शामिल

आयुक्त के साथ हुई इस चर्चा में डॉ. पीजी नाजपांडे, रजत भार्गव, एडवोकेट वेदप्रकाश अधौलिया, डीके सिंह, संतोष श्रीवास्तव, सुभाष चंद्रा, सुशीला कनौजिया, डीआर लखेरा, अर्जुन कुमार, एडवोकेट ब्रजेश साहू सहित अन्य जनसंगठन प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

एन सी सी प्रमाण पत्र गुमा की सूचना

यह कि मैं आशी महेरे पुत्री कृष्ण कुमार महेरे ग्राम पौंड़ी नगना पोस्ट सूरतलाई तहसील पनागर जिला जबलपुर कि निवासी हूं मैं दिनांक 22/12/25/ को घर से चुंगी नाका जाते वक्त कही रास्ते में मेरा एन सी सी प्रमाण पत्र (बी) गिर गया है जिस किसी व्यक्ति को मिले इस मोबाइल नम्बर या पते पर संपर्क करें।

पता- कृष्ण कुमार महेरे
ग्राम पौंड़ी, नगना, पोस्ट सूरतलाई
तहसील- पनागर, जिला जबलपुर
मो 6264551041

बीते साल लार्ज कैप फंड रहे विनर लेकिन स्मॉल कैप ने किया निराश

■ लार्ज कैप ने निवेशकों को बेहतर सुरक्षा दी ■ रिटर्न के मामले में भी बाकी श्रेणी को पीछे छोड़ा ■ साल 2025 में बाजार में रहा उतार-चढ़ाव

हलचल @2025
बिजनेस डेस्क

लार्ज कैप फंड एक प्रकार का म्यूचुअल फंड है जो मुख्य रूप से बड़े मार्केट कैपिटलाइजेशन वाली कंपनियों में निवेश करता है, जो आमतौर पर देश की टॉप 100 कंपनियां होती हैं। ये कंपनियां अच्छी तरह से स्थापित, वित्तीय रूप से मजबूत और अक्सर अपने क्षेत्रों में बाजार के नेता होती हैं। लार्ज कैप फंड्स को स्थिरता और कम जोखिम के लिए जाना जाता है, जो उन्हें रूढ़िवादी निवेशकों के लिए एक अच्छा विकल्प बनाता है।

साल 2025 ने म्यूचुअल फंड निवेशकों को एक साफ संदेश दिया है कि स्थिरता ही असली ताकत है। सालभर बाजार में उतार-चढ़ाव और सेक्टोरल रोटेशन के बीच लार्ज कैप म्यूचुअल फंड्स ने निवेशकों को न सिर्फ बेहतर सुरक्षा दी, बल्कि रिटर्न के मामले में भी बाकी कैटेगरी को पीछे छोड़ दिया। जहां लार्ज कैप फंड्स ने एक साल में औसतन 8.15% का रिटर्न दिया, वहीं स्मॉल कैप फंड्स निवेशकों के लिए सबसे बड़ी निराशा साबित हुए। यह साफ करता है कि 2025 में क्वालिटी, साइज और बैलेंस शीट की मजबूती हर मायने में हाई-रिस्क कैटेगरी पर भारी है। कैटेगरी वाइज देखें तो लार्ड एंड मिड कैप फंड, मल्टी कैप और मिडकैप फंड्स 2–3% के दायरे में ही सिमट गए, जबकि टेक्नोलॉजी सेक्टर फंड्स में 6.79% की गिरावट ने निवेशकों की उम्मीदों को झटका दिया। इसके उलट बैंकिंग और ऑटो-ट्रांसपोर्टेशन जैसे सेक्टोरल फंड्स ने 17% से ज्यादा का दमदार रिटर्न दिया, जिससे यह साफ हुआ कि 2025 स्टॉक-सेलेक्टिव और सेक्टर-ड्रिवन साल रहा। लार्ज कैप स्पेस में आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल, मिराए एसेट, मोतीलाल ओसवाल और महिंद्रा मैनुलिफ़ जैसे फंड्स ने 10–11% के आसपास रिटर्न देकर साल का अंत मजबूत नोट पर किया। कुल मिलाकर, 2025 का साल यह सबक देकर गया कि अनिश्चित बाजारों में लार्ज कैप फंड्स निवेशकों के लिए सबसे भरोसेमंद साथी साबित होते हैं।

लार्ज कैप फंड के फायदे

■ **स्थिरता:** लार्ज कैप कंपनियां बाजार में उतार-चढ़ाव के प्रति कम संवेदनशील होती हैं।
■ **सुसंगत प्रदर्शन:** ये कंपनियां लंबे समय में स्थिर रिटर्न प्रदान करती हैं।
■ **निम्न जोखिम:** लार्ज कैप फंड्स में निवेश करने से जोखिम कम होता है।
■ **डिविडेंड आय:** कई लार्ज कैप कंपनियां नियमित डिविडेंड वितरित करती हैं।
■ **विविधीकरण:** लार्ज कैप फंड्स विभिन्न क्षेत्रों में निवेश करते हैं, जिससे जोखिम कम होता है।

फ्लेक्सी-कैप फंड की पॉपुलैरिटी बढ़ी

फ्लेक्सी-कैप फंड्स का औसत रिटर्न भले ही कुछ कमजोर दिख रहा है, लेकिन इसकी पॉपुलैरिटी बढ़ी है। फ्रैंकलिन टेम्पलटन म्यूचुअल फंड की लेटेस्ट रिपोर्ट के मुताबिक, बीते 12 महीनों में फ्लेक्सी-कैप फंड्स में सभी इक्विटी कैटेगरी में सबसे ज्यादा निवेश आया है। पिछले 12 महीनों में इन फंड्स में करीब 75,700 करोड़ का नेट निवेश दर्ज किया गया। इस कैटेगरी में निवेशकों ने जो खरीदा, उसमें बने रहे। यह दिखाता है कि निवेशक अब सिर्फ बाजार से जुड़े विकल्पों में ज्यादा पैसा नहीं लगा रहे, बल्कि ऐसे फंड भी चुन रहे हैं जो डायवर्सिफिकेशन और लचीलापन दोनों देते हैं। जैसे-जैसे म्यूचुअल फंड बैंक डिपॉजिट पर बढ़त बना रहे हैं, फ्लेक्सी-कैप फंड्स आने वाले समय में लंबी अवधि में संपत्ति बनाने की इस कहानी के केंद्र में बने रह सकते हैं।

एक साल में कितना रिटर्न कैटेगरीवाइज

फंड	रिटर्न
लार्ज कैप	8.15%
लार्ज एंड मिड कैप	1.96%
फ्लेक्सी कैप	3.26%
मल्टी कैप	1.98%
मिड कैप	2.76%
स्मॉल कैप	-5.31%
वैल्यू ओरिएंटेड	5.45%
ईएलएसएस	3.52%
सेक्टोरल-आटो एंड ट्रांसपोर्ट	17.32%
सेक्टोरल-बैंकिंग	17.42%
सेक्टोरल-फार्मा	0.04%
सेक्टोरल-टेक्नोलॉजी	-6.79%
थिमैटिक	2.52%

एक साल में टॉप लार्ज कैप फंड्स ये रहे

फंड्स	रिटर्न
आईसीआईसीआई पू	11.50%
निप्पॉन इंडिया इंडेक्स निफ्टी-50	11.40%
मीराए एसेट	11.00%
मोतीलाल ओसवाल	10.73%
महिंद्रा मैन्युलाइफ	10.59%
बजाज फिनसर्व	10.00%

टॉप लार्ज कैप म्यूचुअल फंड

- निप्पॉन इंडिया लार्ज कैप फंड
- आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लार्ज कैप फंड
- एसबीआई ब्लूचिप फंड
- एचडीएफसी लार्ज कैप फंड
- डीएसपी लार्ज कैप फंड

स्मॉल कैप फंड के फायदे

■ **उच्च विकास क्षमता:** स्मॉल कैप कंपनियों में उच्च विकास क्षमता होती है, जिससे उच्च रिटर्न मिल सकता है।
■ **निम्न मूल्यांकन:** स्मॉल कैप कंपनियों के शेयर अक्सर कम मूल्य पर उपलब्ध होते हैं, जिससे निवेश की लागत कम होती है।
■ **विविधीकरण:** स्मॉल कैप फंड्स विभिन्न क्षेत्रों में निवेश करते हैं, जिससे जोखिम कम होता है। **लॉन्ग-टर्म ग्रोथ:** स्मॉल कैप कंपनियों में लॉन्ग-टर्म ग्रोथ की संभावना अधिक होती है।

स्मॉल कैप फंड के नुकसान

■ **उच्च जोखिम :** स्मॉल कैप कंपनियों में जोखिम अधिक होता है, जिससे निवेश का मूल्य कम हो सकता है।
■ **अस्थिरता :** स्मॉल कैप शेयरों की कीमतें अधिक अस्थिर होती हैं, जिससे निवेश का मूल्य तेजी से बदल सकता है।
■ लिक्विडिटी : स्मॉल कैप शेयरों में लिक्विडिटी कम होती है, जिससे निवेश को बेचना मुश्किल हो सकता है।

2025 चांदी ने दिया बंपर रिटर्न

■ निवेशकों ने 100 फीसदी से ज्यादा रिटर्न लिया
■ अब मुनाफा वसूल करें या निवेश बनाए रखें
■ चांदी की बढ़त ने सभी निवेशों को पीछे छोड़ा

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

साल 2025 में सिल्वर ईटीएफ ने जबरदस्त प्रदर्शन दिया है। इस साल अब तक निवेशकों को 100 फीसदी से भी ज्यादा का रिटर्न मिल चुका है। चांदी की बढ़त ने बाकी सभी निवेशों को पीछे छोड़ दिया है। ऐसे में निवेशक इस उलझन में हैं कि क्या उन्हें अपना मुनाफा वसूल लेना चाहिए (प्रॉफिट बुकिंग) या निवेश बनाए रखना चाहिए? बाजार के जानकारों की सलाह है कि अगर आपके पोर्टफोलियो में चांदी का हिस्सा तय सीमा से ज्यादा हो गया है, तो थोड़ा मुनाफा वसूल लेना चाहिए। अपने निवेश को संतुलित (रीबैलेंस) करने के लिए कुछ हिस्सा बेचकर वापस पुराने लक्ष्य पर आ जाना ही समझदारी है।

क्या कहते हैं एक्सपर्ट?

चांदी में आई 110-130% की भारी बढ़त के बाद मुनाफावसूली करना सही रहेगा। अपने मुनाफे का 25 से 33 फीसदी हिस्सा निकाल लें और जब बाजार गिरे तो फिर से खरीदारी करें। 5 साल के नजरिए से निवेश करना अभी भी अच्छा है। बस इमोशनल होकर फैसला न लें और अनुशासन बनाए रखें। हालांकि मांग मजबूत है। लेकिन कम समय के लिए पैसा लगाने वालों को उतार-चढ़ाव से सावधान रहना चाहिए। वे सलाह देते हैं कि जो लोग ईटीएफ के जरिए चांदी में निवेश कर रहे हैं, उन्हें तेजी आने पर कुछ मुनाफा निकाल लेना चाहिए।

कितना दिया रिटर्न?

साल 2025 में अब तक सिल्वर ईटीएफ ने औसतन 127.31% का रिटर्न दिया है। इस दौरान 21 अलग-अलग फंड्स ने 122% से लेकर 130% तक का मुनाफा कराया। यूटीआई सिल्वर ईटीएफ 130.02% रिटर्न के साथ सबसे आगे रहा। इसके बाद एसबीआई सिल्वर ईटीएफ एफओएफ ने 129.46% का रिटर्न दिया। निप्पॉन इंडिया सिल्वर ईटीएफ ने 127.61% और टाटा सिल्वर ईटीएफ ने करीब 122.68% का फायदा कराया।

क्या अब देर हो गई है?

अब उतने बड़े लेवल पर पैसा लगाना शायद सही न हो जितना कुछ महीने पहले था। चांदी आपके कुल निवेश का छोटा हिस्सा (5-9%) ही होनी चाहिए। नए निवेशकों को एक साथ सारा पैसा लगाने के बजाय किश्तों (एसआईपी) में निवेश करना चाहिए। अभी देर नहीं हुई है, लेकिन एक साथ बड़ी रकम लगाने से बचें। अगर चांदी के दाम गिरकर 1,70,000 से 1,78,000 रुपये प्रति किलो के पास आएं, तो खरीदारी का अच्छा मौका होगा।

आगे क्या होगा?

जानकारों का कहना है कि अब, जबकि चांदी 2 लाख रुपये के पार है, तो 2026 के लिए अगले साल शायद 2025 जैसी धमाकेदार बढ़त न मिले। मुनाफा धीरे-धीरे होगा और बीच-बीच में कीमतें गिरेंगी भी। वहीं, निकुंज सर्राफ को उम्मीद है कि सोलर सेक्टर में बढ़ती मांग और दुनिया भर में सप्लाई की कमी की वजह से 2026 में भी चांदी की मजबूती बनी रहेगी।

क्या है सिल्वर ईटीएफ

सिल्वर ईटीएफ (एक्सचेंज-ट्रेडेड फंड) एक प्रकार का निवेश साधन है जो चांदी की कीमतों पर आधारित होता है। यह एक ऐसा फंड है जो चांदी की कीमतों के साथ-साथ चलता है और निवेशकों को चांदी में निवेश करने का अवसर प्रदान करता है।

सिल्वर ईटीएफ के फायदे

- चांदी में निवेश : सिल्वर ईटीएफ चांदी में निवेश करने का एक आसान और सुविधाजनक तरीका है।
- लिक्विडिटी : सिल्वर ईटीएफ शेयर बाजार में सूचीबद्ध होते हैं, जिससे उन्हें आसानी से खरीदा और बेचा जा सकता है।
- निम्न लागत : सिल्वर ईटीएफ की लागत कम होती है, जिससे निवेशकों को अधिक रिटर्न मिल सकता है।
- विविधीकरण : सिल्वर ईटीएफ निवेशकों को अपने पोर्टफोलियो में विविधीकरण करने में मदद करता है।

सिल्वर ईटीएफ के नुकसान

- चांदी की कीमतों में उतार-चढ़ाव : सिल्वर ईटीएफ की कीमतें चांदी की कीमतों पर आधारित होती हैं, जो उतार-चढ़ाव के अधीन होती हैं।
- जोखिम : सिल्वर ईटीएफ में निवेश करने से जोखिम होता है, क्योंकि चांदी की कीमतें भविष्य में कम हो सकती हैं।
- स्टोरेज और सुरक्षा : सिल्वर ईटीएफ में निवेश करने से पहले निवेशकों को चांदी के स्टोरेज और सुरक्षा के बारे में विचार करना चाहिए [1][2][3]।

भारत में सिल्वर ईटीएफ

- कोटक सिल्वर ईटीएफ
- एसबीआई सिल्वर ईटीएफ
- एचडीएफसी सिल्वर ईटीएफ
- आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल सिल्वर ईटीएफ
- यूटीआई सिल्वर ईटीएफ

छोटे व्यापारियों के लिए बेहद जरूरी है क्लाइमेट इंश्योरेंस

जलवायु परिवर्तन अब सिर्फ भविष्य की चेतावनी नहीं रहा, बल्कि यह छोटे व्यापारियों और दुकानदारों की रोजमर्रा की जिंदगी को सीधे प्रभावित कर रहा है। बाढ़, भीषण गर्मी, भारी बारिश और चक्रवात जैसी घटनाएं पहले के मुकाबले अधिक आ रही है और ज्यादा तीव्रता से हो रही हैं। इसका सबसे बड़ा असर देश के छोटे व्यापारियों और एमएसएमई (सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम) पर पड़ रहा है, जिनकी आमदनी रोज के कारोबार पर टिकी होती है। जानकारों का कहना है कि अधिकतर छोटे व्यापारी सीमित बचत के साथ काम करते हैं। ऐसे में अगर किसी प्राकृतिक आपदा की वजह से दुकान या कारखाना कुछ दिनों के लिए भी बंद हो जाए, तो उन्हें भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। कई बार कुछ दिन का नुकसान ही महीनों की कमाई पर भारी पड़ जाता है।

प्राकृतिक आपदाओं से बचाव

"क्लाइमेट इंश्योरेंस छोटे व्यापारियों के लिए एक ऐसा सुरक्षा साधन है, जो उन्हें प्राकृतिक आपदाओं से उबरने में मदद करता है। इस बीमा के तहत बाढ़, तेज बारिश, गर्मी या चक्रवात जैसी घटनाओं से दुकान, गोदाम, मशीनरी और सामान को हुए नुकसान को कवर किया जा सकता है। इतना ही नहीं, अगर किसी आपदा की वजह से कारोबार अस्थायी रूप से बंद करना पड़े और आमदनी रुक जाए, तो क्लाइमेट इंश्योरेंस से आय के नुकसान की भरपाई भी की जा सकती है।" इस तरह का बीमा छोटे व्यापारियों को जल्दी दोबारा कारोबार शुरू करने में मदद करता है। बिना बीमा के कई व्यापारी मरम्मत या दोबारा स्टॉक खरीदने के लिए पैसों का इंतजाम नहीं कर पाते, जिससे दुकान लंबे समय तक बंद रहती है। इसका नतीजा यह होता है कि ग्राहक दूसरी जगह चले जाते हैं और कारोबार को दोबारा खड़ा करना मुश्किल हो जाता है। कई मामलों में तो छोटे व्यवसाय पूरी तरह से उबर ही नहीं पाते।

पैरामीट्रिक इंश्योरेंस

आज के समय में क्लाइमेट इंश्योरेंस के ऐसे समाधान भी मौजूद हैं, जो खास तौर पर छोटे व्यापारियों और एमएसएमई के लिए बनाए गए हैं। इनमें से एक है पैरामीट्रिक इंश्योरेंस। यह पारंपरिक बीमा से अलग होता है, क्योंकि इसमें नुकसान का लंबा आकलन करने की जरूरत नहीं पड़ती। "पैरामीट्रिक इंश्योरेंस में पहले से तय मौसम से जुड़े संकेतकों, जैसे तय सीमा से ज्यादा बारिश या तापमान बढ़ने पर, अपने आप भुगतान सक्रिय हो जाता है। इससे बीमा राशि जल्दी मिल जाती है। यह व्यवस्था एमएसएमई के लिए इसलिए फायदेमंद है, क्योंकि इसमें पुराने नुकसान के विस्तृत रिकॉर्ड की जरूरत नहीं होती, इसे समझना आसान होता है और आपदा के समय तुरंत पैसा मिल जाता है।" जब किसी आपदा के तुरंत बाद पैसे मिल जाते हैं, तो व्यापारी जल्दी मरम्मत करा सकते हैं, नया सामान ला सकते हैं और दोबारा काम शुरू कर सकते हैं। इससे उनका आत्मविश्वास भी बना रहता है कि मुश्किल हालात में भी वे फिर से खड़े हो सकते हैं।

सुरक्षा नहीं, बल्कि जरूरत बनाता क्लाइमेट इंश्योरेंस

क्लाइमेट इंश्योरेंस को अब सिर्फ एक अतिरिक्त सुविधा नहीं, बल्कि छोटे व्यापारियों के लिए एक बुनियादी सुरक्षा उपकरण के रूप में देखा जाना चाहिए। यह न सिर्फ उनकी आमदनी की रक्षा करता है, बल्कि आपदा के बाद जल्दी संभलने में भी मदद करता है। अचानक आने वाले जलवायु से जुड़े झटकों के बावजूद कारोबार को जारी रखने में यह अहम भूमिका निभाता है। बदलते मौसम और बढ़ती अनिश्चितताओं के दौर में छोटे व्यापारियों और दुकानदारों के लिए क्लाइमेट इंश्योरेंस एक ऐसा सहारा बन सकता है, जो मुश्किल समय में उन्हें पूरी तरह टूटने से बचाए और फिर से आगे बढ़ने का भरोसा दे।

जीएसटी स्लैब और इनकम टैक्स में हुए बड़े बदलाव, मिडिल क्लास को राहत

वर्ष 2025 का साल भारत के टैक्स सिस्टम के लिए काफी अहम रहा। सरकार ने जीएसटी में बड़ी कटौती की, इनकम टैक्स में छूट की लिमिट बढ़ाई गई और लोगों के हाथ में ज्यादा पैसे रहने देना का इरादा दिखाया। इसका मकसद था कि मुश्किल वैश्विक हालात में घरेलू खपत बढ़े और अर्थव्यवस्था को सहारा मिले। विदेशी टैरिफ की अनिश्चितता के बीच ये बदलाव घरेलू मांग को मजबूत करने पर फोकस करते हैं। अब नजर कस्टम्स ड्यूटी को सरल बनाने और रेट कम करने पर है।

कम स्लैब और चीजें सस्ती

साल की सबसे बड़ी खबर रही जीएसटी में भारी बदलाव। 22 सितंबर से करीब 375 सामानों और सर्विसेज पर टैक्स रेट कम कर दिए गए। रोजमर्रा की चीजों पर बोझ कम हुआ और लंबे समय से चली आ रही इनवर्टेड ड्यूटी की समस्या भी काफी हद तक सुलझी। पहले जीएसटी में 5%, 12%, 18% और 28% के चार मुख्य स्लैब थे। अब इन्हें 5% और 18% के दो मुख्य रेट में समेट दिया गया है। हालांकि, तंबाकू, सिगरेट, सिगार, गुटखा, पान मसाला आदि पर 40% का हाई रेट रखा गया है। इस बदलाव से जीएसटी सिस्टम ज्यादा आसान और भरोसेमंद हो गया। सरकार का दावा है कि स्लैब कम होने से झगड़े कम होंगे और कंप्लायंस आसान। अप्रैल में जीएसटी कलेक्शन रिकॉर्ड 2.37 लाख करोड़ रुपये तक पहुंचा था, जबकि पूरे साल औसतन 1.9 लाख करोड़ रुपये रहा। लेकिन रेट कटौती के बाद थोड़ा दबाव पड़ा और ग्रोथ धीमी हुई।

कलेक्शन वर्ष के सबसे निचले स्तर पर

नवंबर में कलेक्शन साल के सबसे निचले स्तर पर आ गया, जो 1.70 लाख करोड़ रुपये रहा। यह पिछले साल की तुलना में सिर्फ 0.7% की बढ़ोतरी थी। नवंबर वो पहला महीना था जब सितंबर की कटौती का पूरा असर दिखा। फिर भी ये सुधार लोगों के लिए फायदेमंद साबित हो रहे हैं। आम इस्तेमाल की चीजें सस्ती हुईं, जिससे खपत बढ़ने की उम्मीद है।

इनकम टैक्स में राहत

मिडिल क्लास को बड़ा तोहफा

डायरेक्ट टैक्स के मोर्चे पर भी सरकार ने हाथ खोले। इनकम टैक्स की छूट लिमिट बढ़ाकर मिडिल इनकम वालों को राहत दी गई। लोगों के पास ज्यादा डिस्पोजेबल इनकम आए, खासकर शहरों में रहने वाले परिवारों को बड़ा फायदा हुए। इससे खुद टैक्स देने की आदत भी मजबूत हुई। 2025 के बजट में नई टैक्स व्यवस्था में 12 लाख रुपये सालाना आय तक कोई इनकम टैक्स नहीं देने का ऐलान हुआ। ये वो व्यवस्था है जिसमें कम रेट हैं लेकिन छूट या डिडक्शन का फायदा नहीं मिलता।

नए रेट कुछ इस तरह

- 4 से 8 लाख रुपये तक 5%
- 8 से 12 लाख रुपये तक 10%
- 12 से 16 लाख रुपये तक 15%
- 16-20 लाख रुपये पर 20%
- 20-24 लाख रुपये पर 25%
- 24 लाख रुपये से ऊपर 30%

टैक्स कलेक्शन धीमा

इन कटौती से अप्रैल से दिसंबर मध्य तक नॉन-कॉर्पोरेट टैक्स कलेक्शन धीमा पड़ा। व्यक्तियों, एचयूएफ और फर्म्स का नेट टैक्स सिर्फ 6.37% बढ़कर 8.47 लाख करोड़ हुआ, जबकि कॉर्पोरेट टैक्स 10.54% बढ़कर 8.17 लाख करोड़ रुपये पहुंचा। इस साल रिफंड 14% घटकर 2.97 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा रहे। अगले साल से नया सिंपल इनकम टैक्स एक्ट 2025 लागू होगा, जो 1 अप्रैल से शुरू होकर पुराने 1961 के एक्ट की जगह लेगा। सिगरेट पर एक्स्ट्रा एक्साइज ड्यूटी और पान मसाला पर सेस लगाने के दो नए कानून भी सरकार जब चाहे लागू कर देगी।

कस्टम्स ड्यूटी पर अब फोकस

जीएसटी और इनकम टैक्स के बड़े सुधार हो जाने के बाद अब नजर कस्टम्स पर है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि कस्टम्स को सरल बनाना सरकार का अगला बड़ा सुधार होगा। इनकम टैक्स जैसी पारदर्शिता और फेसलेस असेसमेंट कस्टम्स में लाना जरूरी है। साथ ही ड्यूटी रेट को रेशनलाइज करना भी। पिछले दो साल में कस्टम्स ड्यूटी लगातार घटी है। लेकिन जहां रेट अभी भी ज्यादा हैं, उन्हें कम करना बाकी है। वित्त मंत्री ने कहा था, "कस्टम्स मेरा अगला बड़ा क्लीन-अप काम है।" 2025-26 बजट में इंडस्ट्रियल गुड्स पर सात अतिरिक्त टैरिफ रेट हटाने का प्रस्ताव था, जिससे कुल स्लैब आठ रह गए। पहले 2023-24 में भी सात टैरिफ हटाए गए थे। एक्सपर्ट्स का मानना है कि ट्रेड के बदलते पैटर्न, कंप्लायंस कॉस्ट और प्रोसीजर की दिक्कतों को देखते हुए कस्टम्स में सुधार जरूरी हैं।

एक बड़ी एफडी की सबसे बड़ी समस्या तब आती है, जब अचानक पैसों की जरूरत पड़े

सात लाख को ऐसे करें निवेश, मिलेगा बड़ा फायदा, एक एफडी में लगाएं पैसे या फिर कई सारी का विकल्प बेहतर

फिक्स्ड डिपॉजिट निवेश के सबसे भरोसेमंद तरीकों में से एक

बिजनेस डेस्क

पैसा कमाने के लिए मेहनत और अनुशासन दोनों चाहिए, लेकिन उसे समझदारी से कहां निवेश किया जाए, यह फैसला उतना ही अहम होता है। आज के दौर में सिर्फ पैसे बचाकर रखना न तो सुरक्षित भविष्य की गारंटी देता है और न ही महंगाई को मात दे पाता है। मजबूत फाइनेंशियल कुशल बनने के लिए जरूरी है कि निवेश आपके लक्ष्य, जोखिम लेने की क्षमता और समय के हिसाब से किया जाए। शेयर, इक्विटी म्यूचुअल फंड, पीपीएफ और सरकारी बचत योजनाओं जैसे कई विकल्प मौजूद हैं, लेकिन, इसके बावजूद बैंक फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) आज भी सुरक्षा और स्थिर रिटर्न चाहने वाले निवेशकों की पहली पसंद बने हुए हैं।

पैसा कमाने के लिए मेहनत और अनुशासन चाहिए

एफडी क्यों है सबसे भरोसेमंद विकल्प

भारत में फिक्स्ड डिपॉजिट को सबसे सुरक्षित निवेश विकल्पों में गिना जाता है। क्योंकि इसमें पूंजी सुरक्षित रहती है और रिटर्न पहले से तय होता है। एफडी की ब्याज दर पर बाजार के उतार-चढ़ाव का असर भी नहीं पड़ता। साथ ही, डीआईसीजीसी इंश्योरेंस के तहत 5 लाख रुपये तक की जमा रकम सुरक्षित रहती है। इससे निवेशकों को अतिरिक्त भरोसा मिलता है। बैंक और एनबीएफसी 7 दिन से लेकर 10 साल तक की अवधि के लिए एफडी की सुविधा देते हैं। हालांकि, एफडी से बेहतर रिटर्न पाने के लिए सिर्फ पैसा जमा करना काफी नहीं होता, बल्कि सही अवधि और सही स्ट्रक्चर चुनना भी जरूरी होता है।

एक एफडी या कई एफडी, किसमें फायदा

निवेशकों के मन में अक्सर यह उलझन रहती है कि पूरी रकम एक ही एफडी में लगाई जाए या उसे कई एफडी में बांटा जाए। अब मान लीजिए आपके पास 7 लाख रुपये हैं, तो क्या 7 लाख की एक एफडी बेहतर है या 1-1 लाख की सात एफडी। एक्सपर्ट्स बताते हैं कि अगर ब्याज दर समान है, तो मैच्योरिटी पर मिलने वाली कुल रकम दोनों ही मामलों में बराबर रहेगी। फर्क सिर्फ सुविधा, लचीलापन और जरूरत पड़ने पर पैसे निकालने की आसानी में होता है।

बड़ी एफडी के फायदे क्या हैं

एक बड़ी एफडी का सबसे बड़ा फायदा इसकी सादगी है। इसमें आपको सिर्फ एक ही डिपॉजिट करना होता है, एक ही मैच्योरिटी डेट होती है और ब्याज भी एक जगह ही जुड़ता है। निवेश को ट्रैक करना आसान रहता है, न तो कई एफडी रसीदें संभालने की झंझट होती है और न ही अलग-अलग मैच्योरिटी याद रखने की जरूरत पड़ती है। जो निवेशक 'लगाओ और भूल जाओ' वाला तरीका पसंद करते हैं, उनके लिए यह विकल्प काफी सुविधाजनक माना जाता है। लंबी अवधि के लिए पैसा लॉक करने से ब्याज दर स्थिर रहती है और निवेशक बिना किसी रुकावट के मैच्योरिटी तक बेहतर रिटर्न हासिल कर सकता है। खासकर रिटायर्ड लोग या ऐसे निवेशक, जिनके पास पहले से इमरजेंसी फंड मौजूद है, उनके लिए एक बड़ी एफडी मानसिक शांति देने वाला विकल्प बन सकती है।

एक बड़ी एफडी के नुकसान समझना जरूरी

एक बड़ी एफडी की सबसे बड़ी समस्या तब आती है, जब अचानक पैसों की जरूरत पड़ जाए। अगर आपको सिर्फ 50,000 रुपये चाहिए, तो आप आंशिक निकासी नहीं कर सकते। पूरी एफडी तोड़नी पड़ेगी, जिस पर पूरे अमाउंट पर पेनल्टी लगेगी और कुल रिटर्न घट जाएगा। इसके अलावा सुरक्षा का पहलू भी अहम है। भारत में डीआईसीजीसी नियमों के तहत एक बैंक में जमा राशि पर सिर्फ 5 लाख रुपये तक का ही इंश्योरेंस मिलता है। ऐसे में 7 लाख रुपये एक ही बैंक में रखने पर 2 लाख रुपये अनइंश्योर्ड रह जाते हैं। जरूरत पड़ने पर पूरी रकम नहीं, सिर्फ एक एफडी तोड़नी पड़ती है, जिससे बाकी पैसा ब्याज कमाता रहता है। प्रीमैच्योर विदड्रॉल की पेनल्टी सिर्फ उसी एफडी पर लगती है, पूरी रकम पर नहीं।

इमरान-यामी की फिल्म हक अब ओटीटी पर

मुंबई। इमरान हाशमी और यामी गौतम की फिल्म 'हक'जब सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी, तब क्रिटिक्स ने फिल्म को काफी सराहा था। हालांकि, बॉक्स ऑफिस पर फिल्म कोई खास प्रदर्शन नहीं कर पाई थी। शाह बानो बेगम के केस पर आधारित यह फिल्म अब घर बैठे देख सकेंगे। क्योंकि, अब हक ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स पर रिलीज हो चुकी है। फिल्म 2 जनवरी से नेटफ्लिक्स पर स्ट्रीम करने लगी है। आधिकारिक इंस्टाग्राम अकाउंट पर 'हक' का पोस्टर शेयर करते हुए इसकी घोषणा की गई थी। डिजिटल प्लेटफॉर्म की ओर से पोस्ट के कैप्शन में लिखा गया, 'घर की चार दीवारों से अदालत तक।

लाइफ Style

अलीजेह

म्यूजिकल प्रोजेक्ट में सिद्धांत के साथ आएंगी नजर

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

साल 2014 में रिलीज हुई फ्रेंच फिल्म 'ला फैमिली बेलियर' का हिंदी रीमेक बनने वाला है। खबर है कि निर्माताओं ने इस म्यूजिकल फिल्म के लिए सिद्धांत चतुर्वेदी और अलीजेह अग्निहोत्री को कास्ट किया है। फिल्म का निर्देशन विकास बहल करने वाले हैं। इसकी शूटिंग जून से अगस्त के बीच शुरू हो सकती है।

'ला फैमिली बेलियर' एक कॉमेडी फिल्म है जिसके निर्देशक एरिक लार्टिगाउ हैं। इसकी कहानी 16 साल की एक लड़की के इर्द-गिर्द घूमती है। लड़की अपने मूक-बधिर माता-पिता की देखभाल करती है। उसकी जिंदगी तब बदल जाती है, जब उसके म्यूजिक टीचर को उसकी खूबसूरत गाने की आवाज का पता चलता है। लड़की को अपने सपने को पूरे करने और अपने परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारी के बीच चुनाव करना होता है। 'ला फैमिली बेलियर' ने 2022 में 94वें एकेडमी अवॉर्ड्स (ऑस्कर) में बेस्ट पिक्चर का अवॉर्ड जीता था। 'सिद्धांत चतुर्वेदी और अलीजेह अग्निहोत्री की एक फिल्म है, जिसे विकास बहल डायरेक्ट करेंगे। यह बेहतरीन फिल्म होगी। यह एक फ्रेंच फिल्म 'ला फैमिली बेलियर' का रीमेक है, जिसका रीमेक बनाया जाएगा। इस फिल्म ने ऑस्कर जीता था। यह एक म्यूजिकल फिल्म है, यह संजय लीला भंसाली की 'खामोशी' जैसी है। हमने इसे ओरिजिनल फ्रेंच फिल्म से लिया है।' सिद्धांत चतुर्वेदी को आखिरी बार 2025 की फिल्म 'धड़क 2' में तृप्ति डिमरी के साथ देखा गया था। अलीजेह अग्निहोत्री ने साल 2023 में रिलीज हुई फिल्म 'फर्रे' से एक्टिंग में डेब्यू किया था।

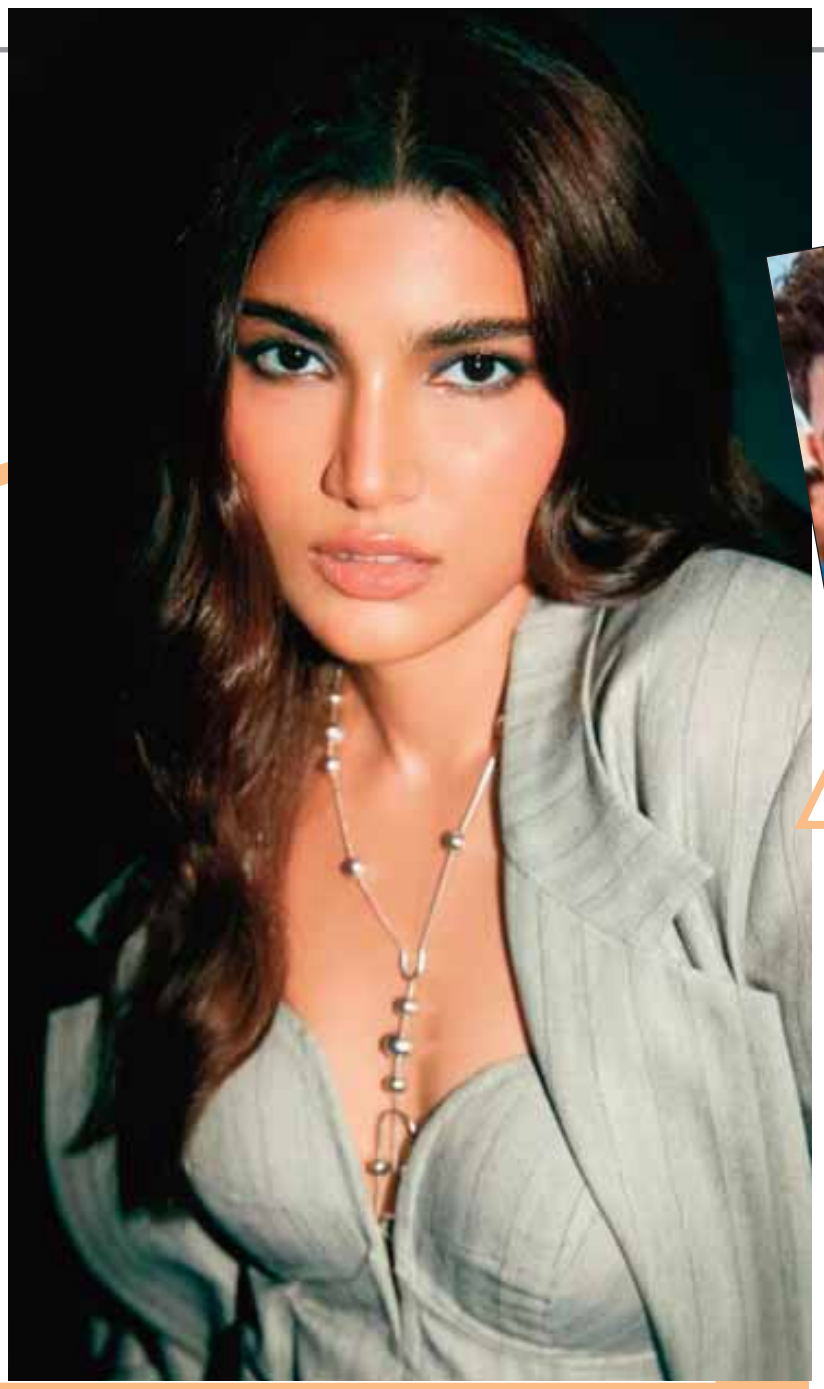

हॉलीवुड मसाला

'मुझसे शादी' गाने पर किया डांस

लॉस एंजिल्स। प्रियंका चोपड़ा के साथ शादी के बाद हॉलीवुड सिंगर निक जोनस पर देसी रंग चढ़ गया है। वह अक्सर हिंदी गानों पर थिरकते नजर आते हैं। निक जोनस ने अपने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो पोस्ट किया, जिसमें म्यूजिक बैंड के मेंबर और उनके भाई साथ नजर आ रहे हैं। निक और बाकी लोग प्रियंका चोपड़ा की बॉलीवुड फिल्म 'मुझसे शादी करोगे' के टाइटल ट्रैक पर झूमते दिखे। खासकर निक ने इस गाने पर जबरदस्त स्टेप्स किए।

स्ट्रेंजर थिंग्स 5 में वेक्ना का होगा खात्मा?

लॉस एंजिल्स। 'स्ट्रेंजर थिंग्स' सीजन 5 का आखिरी एपिसोड सबसे लंबा बताया जा रहा है। फाइनल एपिसोड लगभग 2 घंटे और 5 मिनट का है। यह सीरीज इन दिनों सोशल मीडिया पर भी ट्रेंड कर रही है, आखिरी एपिसोड के कई स्पॉलर भी सामने आ रहे हैं। यह सीरीज अच्छाई और बुराई के कॉन्सेप्ट पर ही है। इस सीरीज में विलेन का किरदार यानी वेक्ना पांचवें सीजन में काफी ताकतवार हो चुका है। ऐसे में इलेंवन (सीरीज का लीड कैरेक्टर) और उसकी टीम के लोग वेक्ना का सामना करते हैं, इनमें से कई लोगों के पास सुपरपावर भी हैं। पांचवें सीजन में वेक्ना पास खतरनाक योजना है। हो सकता है कि इस बार सीरीज में कुछ किरदार मर भी जाएं। सोशल मीडिया पर एक खबर है कि हॉकिन्स नाम के किरदार को बचाने की कोशिश भी सीरीज में दिख सकती है।

9 को री-रिलीज होगी किस किसको...

मुंबई। कॉमेडियन कपिल शर्मा ने अपने फैंस को बड़ी खुशखबरी दी है। उनकी अदाकारी वाली फिल्म 'किस किसको प्यार करूं 2' एक बार फिर से सिनेमाघरों में दस्तक देने वाली है। फिल्म के निर्माताओं ने गुरुवार को ऐलान किया है कि यह फिल्म 9 जनवरी को री-रिलीज की जाएगी। निर्माताओं को यकीन है कि इस बार फिल्म पर दर्शक अच्छा रिस्पॉन्स देंगे। ट्रेड एनालिस्ट तरण आदर्श के मुताबिक फिल्म को पहले रणवीर सिंह की अदाकारी वाली फिल्म 'धुरंधर' और हॉलीवुड फिल्म 'अवतारः फायर एंड ऐश' की वजह से सिनेमाघरों में ज्यादा स्क्रीन नहीं मिल पाई थी। इसकी वजह से इसकी कमाई पर असर पड़ा था। फिल्म के निर्माता रतन जैन के मुताबिक लोगों में अभी भी फिल्म 'किस किसको प्यार करूं 2' का क्रेज है।

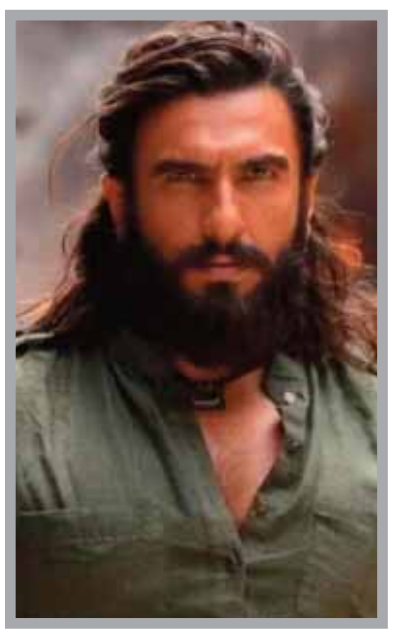

धुरंधर नए साल में कुछ बदलाव के साथ...

मुंबई। बॉक्स ऑफिस पर धमाल मचा रही रणवीर सिंह की धुरंधर का 1 जनवरी को नया वर्जन रिलीज किया गया है। इस नए वर्जन में धुरंधर में कुछ बदलाव किए हैं। साल 2025 में रणवीर सिंह की धुरंधर ने बॉक्स ऑफिस पर कमाल कर दिया। फिल्म ने बहुत सी फिल्मों के रिकॉर्ड तोड़े। ग्लोबल बॉक्स ऑफिस पर फिल्म 1,100 करोड़ का आंकड़ा पार कर लिया। अब नए साल पर इस फिल्म को नए अंदाज में रिलीज किया गया है। नए साल पर फिल्म का रिवाइज्ड वर्जन रिलीज किया गया है। दरअसल, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा फिल्म में कुछ बदलाव बताए गए। उन्हीं बदलाव को ध्यान में रखते हुए फिल्म का नया वर्जन रिलीज किया गया है। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के निर्देश के मुताबिक, इस नए वर्जन में मेकर्स ने दो शब्दों को म्यूट किया है और एक डायलोग में बदलाव किया है।

टीवी मसाला

इक्कीस हमारे लिए आखिरी अनमोल निशानी है : अमिताभ

नई दिल्ली। अमिताभ बच्चन 'कौन बनेगा करोड़पति 17' में दोस्त धर्मेंद्र को याद कर भावुक हो गए। धर्मेंद्र की आखिरी फिल्म 'इक्कीस' 1 जनवरी को नए साल पर रिलीज है, पर वह इस दुनिया में नहीं हैं। अमिताभ ने कहा कि 'इक्कीस' उनके लिए उनके दोस्त की आखिरी अनमोल निशानी है, जो उनका परिवार भी था। धर्मेंद्र 24 नवंबर 2025 को इस दुनिया को अलविदा कह गए और 1 जनवरी 2026 को उनकी फिल्म 'इक्कीस' रिलीज हो रही है। किसी ने सोचा नहीं था कि यह धर्मेंद्र की आखिरी फिल्म साबित होगी, और वह इसे देखने के लिए भी नहीं रहेंगे। 'इक्कीस' में अमिताभ बच्चन के नाती अगस्त्य नंदा लीड रोल में हैं, जो सेकेंड लेफ्टिनेंट अरुण खेत्रपाल का किरदार निभा रहे हैं। फिल्म में जयदीप अहलावत भी हैं। हाल ही जब अगस्त्य नंदा, जयदीप अहलावत और डायरेक्टर श्रीराम राघवन 'कौन बनेगा करोड़पति 17' में पहुंचे, तो बिग बी भावुक हो गए। उन्होंने जिगरी यार धर्मेंद्र को याद किया, जिनके साथ ढेरों फिल्में की थीं और गहरा रिश्ता था। वहीं, प्रोमो में अमिताभ बच्चन दोस्त धर्मेंद्र और उनकी फिल्म 'इक्कीस' के लिए कह रहे हैं, 'फिल्म 'इक्कीस' हमारे लिए वो आखिरी अनमोल निशानी है, जो हिंदी फिल्म जगत की महान विभूति अपने करोड़ों चाहने वालों के लिए छोड़ गए। एक कलाकार अपनी सांस के अंतिम छोर तक, कला की साधना करना चाहता है और कुछ ऐसा ही किया मेरे मित्र, मेरे परिवार, मेरे आदर्श, धर्मेन्द्र देव जी ने।' अमिताभ बच्चन ने आगे कहा, 'धरमजी सिर्फ एक शख्स नहीं थे, एक एहसास थे। और एहसास जो होता है, वो कभी जाने नहीं देता किसी के अंदर से। बस यादें बनकर, दुआएं बनकर साथ चलते रहता है।'

भाबीजी घर पर हैं 2.0 में नहीं दिखेंगी सौम्या

नई दिल्ली। पॉपुलर सिटकॉम 'भाबीजी घर पर हैं!' दूसरे सीजन के साथ टीवी पर लौटा, जिसमें शिल्पा शिंदे 'अंगूरी भाभी' के रोल में वापसी कर चुकी हैं।

इस सीजन में पत्नियों की अदला-बदली दिखाई जाएगी और कई सारे ट्विस्ट भी होंगे। सौम्या टंडन ने जब 'भाबीजी घर पर हैं!' छोड़ा था, तो उसके बाद विदिशा श्रीवास्तव ने उन्हें शो में रिप्लेस किया था। अब शिल्पा शिंदे एक दशक बाद'भाबीजी घर पर है 2.0' में अंगूरी भाभी के रूप में लौटीं, तो फैंस की खुशी का ठिकाना नहीं था। ऐसे में वो जानने को उत्सुक थे कि क्या टंडन भी वापसी करेंगी? इस बारे में सौम्या ने कहा, 'नहीं, मैं 'भाभीजी घर पर है 2.0' में बिल्कुल भी वापस नहीं आ रही हूं। मैं एक दूसरे प्रोजेक्ट में बिजी हूं। फिलहाल, मैं कुछ और कर रही हूं। इसलिए वापसी का तो सवाल ही नहीं उठता।' सौम्या टंडन ने यह भी कन्फर्म किया कि वह 'धुरंधर 2' में उल्फत के रूप में वापसी करेंगी। हालांकि, एक्ट्रेस ने यह भी कहा कि 'धुरंधर' के दूसरे पार्ट में उनका स्क्रीनटाइम कम होगा। वह बोलीं, ''धुरंधर पार्ट 2' में मेरा रोल बहुत छोटा है क्योंकि मेरे पति की मौत हो चुकी है।

डेमोन कॉलोनी 3 का पहला लुक आया सामने

मुंबई। तमिल सिनेमा की चर्चित हॉरर-थ्रिलर फ्रेंचाइजी 'डेमोन कॉलोनी' अपनी नई किस्त के साथ दर्शकों को डराने के लिए तैयार है। डेमोन कॉलोनी 3 का पहला लुक सामने आते ही फिल्म को लेकर लोगों का उत्साह चरम पर पहुंच गया है।

पोस्टर में डर, रहस्य और अंधेरे की जो झलक दिखती है, वह साफ इशारा करती है कि इस बार कहानी पहले से कहीं ज्यादा खतरनाक मोड़ लेने वाली है। इस फिल्म के साथ एक बार फिर अरुल्निथी अपने लोकप्रिय किरदार में लौट रहे हैं। पहले दो पार्ट्स में जिस रहस्यमयी दुनिया और शापित घटनाओं ने दर्शकों को बांधे रखा था, तीसरे भाग में वही कहानी और गहराई के साथ आगे बढ़ती नजर आएगी। निर्देशक अजय ज्ञानमुथु ने इस फ्रेंचाइजी को सिर्फ डर तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसमें मनोवैज्ञानिक तनाव और रहस्य का ऐसा ताना-बाना बुना है, जिसने डेमोन कॉलोनी को अलग पहचान दिलाई। डेमोन कॉलोनी की टैगलाइन है- 'द एंड इज टू फार' यानी अंत अभी बहुत दूर है। यह टैगलाइन खुद में संकेत देती है कि पिछली फिल्मों में शुरू हुआ अंधेरे का खेल अभी खत्म नहीं हुआ है। पहले भागों में जिन अलौकिक शक्तियों और शाप का सामना किरदारों ने किया था, उसका असर अब भी बरकरार है और इस बार टकराव और भी भयावह होने वाला है। इस फिल्म में अरुल्निथी के साथ प्रिय भवानी शंकर, अर्चना रविचंद्रन, मुथुकुमार और मीनाक्षी गोविंदराजन भी अपनी भूमिकाओं में वापसी कर रहे हैं। एक ही कास्ट का लौटना इस बात का संकेत है कि कहानी में निरंतरता रहेगी और दर्शकों को उसी डरावनी दुनिया में फिर से ले जाया जाएगा, जहां हर मोड़ पर अनहोनी का अहसास होता है।

2026 में इन फिल्मों का होगा बॉक्स ऑफिस क्लैश, कार्तिक की रणबीर से होगी टक्कर...

नई दिल्ली। नए साल 2026 फिल्म के दीवानों के लिए मजेदार रहने वाला है। इस साल कुछ बेहतरीन फिल्में रिलीज होने वाली हैं। इन फिल्मों का फैंस को बेसब्री से इंतजार है। कुछ फिल्मों का बॉक्स ऑफिस पर क्लैश भी देखने को मिलेगा। इन फिल्मों में रणवीर सिंह की धुरंधर 2 से लेकर शाहिद कपूर की ओ रोमियो तक शामिल है।

जना नायकन और द राजा साहब: सबसे पहला क्लैश जनवरी के महीने में ही देखने को मिलेगा। ये क्लैश तमिल भाषा की फिल्म जना नायकन और तेलुगु भाषा की द राजा साहब के बीच होगा। दोनों फिल्में 9 जनवरी को सिनेमाघरों में रिलीज होंगी। जना नायकन में थलपति विजय लीड रोल में नजर आएंगे। वहीं, द राजा साहब में प्रभास और संजय दत्त नजर आएंगे।

हैप्पी पटेल : खतरनाक जासूस और मायासभा: 9 जनवरी के बाद 16 जनवरी को बॉक्स ऑफिस पर क्लैश होगा। हैप्पी पटेलः खतरनाक जासूस आमिर खान के प्रोडक्शन में बनी फिल्म होगी। इस फिल्म से इमरान खान फिल्मों में कमबैक करेंगे। हैप्पी पटेल का क्लैश 16 जनवरी को राही अनिल बर्वे की फिल्म मायासभा से होगा। मायासभा एक साइकोलॉजिकल थ्रिलर फिल्म होगी।

तू या मैं और ओ रोमियो : शनाया कपूर और आदर्श गौरव की फिल्म तू या मैं और शाहिद कपूर की फिल्म ओ रोमियो का क्लैश होगा। ओ रोमियो को विशाल भरद्वाज डायरेक्ट कर रहे हैं। तू या मैं 14 फरवरी को रिलीज होगी। वहीं, शाहिद कपूर की ओ रोमियो 13 फरवरी को रिलीज होगी।

धुरंधर 2, टॉक्सिक और डकैत : 19 मार्च को बड़ा क्लैश देखने को मिलेगा। रणवीर सिंह की धुरंधर का पार्ट 2 इसी दिनी रिलीज होगी। साउथ के सुपरस्टार यश की टॉक्सिक और अनुराग कश्यप की फिल्म डकैत के बीच क्लैश देखने को मिलेगा।

भूत बंगला और आवारापन 2: 2026 में अक्षय कुमार और इमरान हाशमी की भी क्लैश देखने को मिलेगी। अक्षय कुमार की भूत बंगला 2 अप्रैल को रिलीज होगी। वहीं, इमरान हाशमी की आवारापन 2 3 अप्रैल को रिलीज होगी।

नागजिला और लव एंड वॉर: लिस्ट में कार्तिक आर्यन की फिल्म नागजिला और रणबीर कपूर, आलिया भट्ट और विकी कौशल की फिल्म लव एंड वॉर है। दोनों फिल्में 14 अगस्त को सिनेमाघरों में रिलीज हो सकती हैं।

आने वाला हर दिन है अनमोल, आपकी सभी कोशिशें हों सफल

कमल हासन-चिरंजीवी और धनुष समेत इन साउथ स्टार्स ने दी नए साल की बधाई

नई दिल्ली। नए साल का स्वागत हो चुका है। हर कोई अपने-अपने तरीके से साल 2026 की शुभकामनाएं दे रहा है। इसी कड़ी में साउथ सिनेमा के तमाम स्टार्स भी अपने-अपने फैंस को नए साल की शुभकामनाएं दे रहे हैं। इस मौके पर सुपरस्टार रजनीकांत जहां अपने घर के बाहर आए और फैंस का अभिवादन स्वीकार करते हुए उन्हें नए साल की शुभकामनाएं दीं। वहीं, कई अन्य सेलेब्स ने सोशल मीडिया पर पोस्ट के जरिए फैंस को हैप्पी न्यू ईयर बोला है।

घर के बाहर खड़े फैंस से मिले रजनीकांत

तमिल सुपरस्टार रजनीकांत नए साल के मौके पर अपने घर के बाहर खड़े फैंस से आके मिले और उनका अभिवादन किया। इस दौरान थलाइवा ने पहले हाथ हिलाकर फैंस का अभिवादन किया, उसके बाद दोनों हाथ जोड़कर फैंस को धन्यवाद बोला। इस दौरान भारी संख्या में घर के बाहर फैंस इकट्ठा नजर आए।

आपकी कोशिशें सफल हों

सुपरस्टार कमल हासन ने भी अपने फैंस को नए साल की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने एक्स पर लिखा, 'एक और साल आने वाला है। पिछले साल से बेहतर, दयालु और समझदार बनने का एक और मौका। उत्कृष्टता एक निरंतर प्रक्रिया है। आपको नए साल की हार्दिक शुभकामनाएं। आने वाला हर दिन अनमोल है। आपकी सभी कोशिशें सफल हों और आपको खुशी दें।'

सकारात्मकता और एकजुटता से करें नए साल का स्वागत

मेगास्टार चिरंजीवी ने भी सोशल मीडिया पर एक पोस्ट के माध्यम से अपने फैंस को नए साल की शुभकामनाएं दीं। एक्टर ने लिखा, 'आप सभी को नए साल की हार्दिक शुभकामनाएं। आइए इस वर्ष का स्वागत सकारात्मकता, आशा और एकजुटता के साथ करें और इसे सभी के लिए एक सुंदर साल बनाएं। नव वर्ष 2026 की हार्दिक शुभकामनाएं।'

अल्लू अर्जुन ने फैंस का जताया आभार : 'पुष्पा' स्टार अल्लू अर्जुन ने भी अपने फैंस के लिए शुभकामनाएं भेजते हुए लिखा, 'जैसे-जैसे यह साल खत्म हो रहा है, मेरे मन में केवल कृतज्ञता है। इस सफर के लिए, इससे मिले सबक के लिए और मेरे चारों ओर मौजूद प्यार के लिए। मेरे प्रशंसकों हर पड़ाव पर मेरा साथ देने के लिए धन्यवाद। आपका विश्वास मुझे हर दिन शक्ति और उद्देश्य देता है। उत्साह से आगे देख रहा हूं, आने वाले समय की शुरुआत के लिए तैयार हूं। नए साल 2026 की शुभकामनाएं।'

इन स्टार्स ने भी दीं शुभकामनाएं

इसके अलावा साउथ के कई अन्य स्टार्स ने भी नए साल की शुभकामनाएं दीं। इनमें जूनियर एनटीआर, प्रभास, कार्थी, प्रकाश राज और रवि तेजा के नाम शामिल हैं।

धनुष ने फैंस को बताया अपनी ताकत

अभिनेता धनुष ने 2025 का आभार जताते हुए नए साल का स्वागत किया। अपने फैंस का आभार जताते हुए धनुष ने उन्हें अपनी सबसे बड़ी ताकत बताया। इसके साथ ही उन्होंने सभी को खुशहाल, स्वस्थ और समृद्ध नव वर्ष की शुभकामनाएं दीं। धनुष ने अंत में 'ओम नमः शिवाय' के साथ अपनी शुभकामनाएं पूरी कीं।

विजय ने फोटोज के साथ दीं शुभकामनाएं

अभिनेता विजय देवरकोंडा ने अपने नए साल वेकेशन की कई तस्वीरें भी साझा कीं। इनमें वो अपने दोस्तों के साथ नजर आ रहे हैं। इसके साथ ही उन्होंने कैप्शन में नए साल की शुभकामनाएं देते हुए लिखा, 'नए साल की हार्दिक शुभकामनाएं मेरे प्यारे दोस्तों। हम साथ-साथ आगे बढ़ें, ढेर सारी यादें बनाएं, अच्छे काम करें, प्यार, खुशी और जीवन को आगे बढ़ाएं। आप सभी को ढेर सारा प्यार।'

तीसरे विश्व युद्ध से लेकर आर्थिक संकट तक नास्त्रेदमस की डरावनी भविष्यवाणियां

पेरिस। भविष्यवक्ता नास्त्रेदमस ने भविष्यवाणी की थी कि साल 2026 के मध्य से तीसरे विश्व युद्ध की शुरुआत हो सकती है। यह युद्ध आगे जाकर बेहद खतरनाक साबित होगा। धर्म और राष्ट्रवाद के नाम पर लोग एक-दूसरे की हत्या करेंगे। उन्होंने आगे अपनी भविष्यवाणी में कहा है कि समुद्री युद्ध एक बड़ी नौसेना या समुद्री घटना साल 2026 में दुनिया को हिलाकर रख सकती है। कोई बहुत बड़ा जहाज डूब सकता है या समुद्री युद्ध शुरू हो सकता है। उनका दावा था कि हो सकता है किसी देश की गलत हरकत से समुद्री तनाव अचानक बढ़ जाए और बड़े राष्ट्र आमने-सामने आ जाएं। नॉस्त्रेदमस के मुताबिक, जिस दिन जहाज समुद्र में गिरेगा, उस दिन महासागर की शक्ति से दुनिया की राजनीति में बदलाव हो जाएगा।

दुनिया में आर्थिक संकट – नास्त्रेदमस ने अपनी भविष्यवाणी में कहा था कि साल 2026 में विश्व के बड़े देशों जैसे अमेरिका, ब्रिटेन जैसे देशों को आर्थिक संकट का सामना

करना पड़ सकता है। इसकी वजह से समाज में अशांति फैल सकती है। लोगों को महंगाई की मार झेलनी पड़ सकती है। इस बड़े संकट की वजह से दुनिया के कई बड़े नेताओं को पतन का सामना भी करना पड़ेगा।

प्राकृतिक आपदा– नास्त्रेदमस की एक और भविष्यवाणी के मुताबिक, साल 2026 में भीषण गर्मी से कई इलाकों में सूखा पड़ेगा। फिर अचानक इतनी भयंकर बारिश होगी कि जगह-जगह बाढ़ आ जाएगी। साल 2026 को तबाही का साल भी माना जा रहा है। इसमें अधिक बारिश, जल स्तर में वृद्धि और विनाशकारी बाढ़ आ सकती है। इससे पर्यावरण और लोगों को भारी नुकसान होगा।

परमाणु हमले की विष्यवाणी–

नास्त्रेदमस ने साल 2026 में परमाणु हमला, मानव अंतरिक्ष कार्यक्रमों के पतन की ओर इशारा किया है। कहा जा रहा है कि मंगल पर अंधेरा छा जाएगा, कोई बड़ा देश भी परमाणु हमले की तैयारी कर सकता है।

अंतरिक्ष का सबसे खतरनाक ज्वालामुखी अब उगल रहा पानी

वॉशिंगटन। ओलिंपस मॉन्स मंगल ग्रह के पश्चिमी हिस्से में भूमध्य रेखा के पास है। यह थारसिस नाम के एक बड़े ज्वालामुखी इलाके में आता है। यह ज्वालामुखी धरती के किसी भी पहाड़ से कहीं ज्यादा ऊंचा और चौड़ा है। इसकी ऊंचाई करीब 26 किलोमीटर तक जाती है। इसका फैलाव 600 किलोमीटर से भी ज्यादा है। इतना बड़ा होने के बावजूद यह ऊपर से देखने पर बहुत ज्यादा नुकीला नहीं लगता। इसके चारों तरफ कई किलोमीटर ऊंची गोल दीवार जैसी संरचना है। बीच में गहरे गड्ढों से भरा बड़ा सा गड्ढा मौजूद है जिसे कैल्डेरा कहा जाता है।

चोटी पर मिला पानी का फ्रॉस्ट

2024 में वैज्ञानिकों ने ओलिंपस मॉन्स की चोटी के पास पानी की बर्फ के हल्के संकेत देखे। यह बर्फ मौसम के साथ आती-जाती रहती है। मात्रा बहुत ज्यादा नहीं है लेकिन फिर भी यह करीब 60 ओलंपिक स्विमिंग पूल जितने पानी के बराबर मानी जा रही है। आग उगलने वाले ज्वालामुखी की चोटी पर पानी का होना वैज्ञानिकों के लिए हैरानी की बात है।

पहले कैसे दिखता था ओलिंपस मॉन्स

अंतरिक्ष यान पहुंचने से पहले धरती से टेलीस्कोप के जरिए मंगल पर एक चमकीला सा धब्बा दिखता था। वैज्ञानिकों ने उसे निक्स ओलंपिका या ओलिंपिक स्नो नाम दिया था। उन्हें लगता था कि यह कोई बर्फीली जगह है। 1971 में नासा के मेरिनर-9 यान ने साफ कर दिया कि यह बर्फ नहीं, बल्कि एक बहुत बड़ा ज्वालामुखी है। दुनिया को मंगल के इस विशाल पहाड़ का असली आकार समझ में आया।

बिना टेक्टोनिक प्लेट्स के कैसे बढ़ा

धरती पर ज्वालामुखी प्लेटों की हलचल से बनते हैं। प्लेटें खिसकती रहती हैं इसलिए ज्वालामुखी ज्यादा देर एक जगह सक्रिय नहीं रहते। मंगल पर प्लेटें नहीं खिसकतीं हैं। ओलिंपस मॉन्स एक ही जगह पर लंबे समय तक लावे का स्रोत बना रहा था। लाखों साल तक बार-बार लावा निकलता रहा और पहाड़ बढ़ता ही चला गया था।

क्या यह ज्वालामुखी पूरी तरह मर चुका है

आज ओलिंपस मॉन्स से कोई विस्फोट नहीं हो रहा है, लेकिन यह पूरी तरह बहुत पुराना भी नहीं है। कुछ लावा बहाव करीब 2.5 करोड़ साल पुराने माने जाते हैं। जो ग्रहों के हिसाब से ज्यादा पुराना समय नहीं है। मंगल का पतला वातावरण और पानी की कमी इस ज्वालामुखी को ज्यादा घिसने नहीं देती इसलिए आज भी यह लगभग उसी हालत में नजर आता है।

रोचक खबरें

भारत का सबसे अनोखा गांव, जहां एक-दूसरे को अनोखे तरीके बुलाते से हैं लोग

नई दिल्ली। दुनिया में कई शहरों और गांवों को अनोखी वजहों से जाना जाता है। भारत में भी एक ऐसा ही गांव है, जिससे उसके अनोखे अंदाज के लिए जाना जाता है। हम आपको अपनी खबर में गांव की खासियत के बारे में बताते हैं। दुनिया में कोई ऐसा नहीं होगा जिसका नाम न हो। नाम से ही लोग एक दूसरे को बुलाते हैं। माता-पिता द्वारा दिए गए नाम से ही लोगों को पहचाना जाता है, लेकिन भारत के एक गांव में लोगों को नाम से नहीं, बल्कि एक धुन से बुलाया जाता है। भारत का यह अनोखा गांव। मेघालय राज्य में स्थित है, जहां लोग एक दूसरे को सीटी बजाकर बुलाते हैं। इसकी वजह से बच्चे के पैदा होने पर उसके नाम पर एक धून तय हो जाती है और यही उनका नाम हो जाता है। अब आपके मन में सवाल खड़ा हो रहा होगा कि बिना नाम लिए किसी को कैसे बुलाया जाता होगा? किसी को बुलाने के लिए क्यों सीटी बजानी होती है। भारत में मेघालय में स्थित यह गांव बिल्कुल अलग है। खासी पहाड़ी में स्थित गांव का नाम कांगथान है। इसकी अनोखी खासियत के लिए इस गांव को व्हिसलिंग विलेज भी कहा जाता है। गांव में बच्चा पैदा होने पर उसकी मां उसे एक अलग धुन बनाकर सुनाती है। धीरे-धीरे बच्चा धुन सुनकर पहचाना जाता है कि यह उसके नाम की धुन है। इसके बाद लोग उसे बुलाने के लिए सीटी बजाकर धुन का इस्तेमाल करते हैं। चिड़ियों की चहचहाहट से यह धुन प्रभावित होती है। धुन को जिंग्रवई लॉबेई कहा जाता है। सोशल मीडिया पर आपको इसके कई वीडियो देखने को मिल जाएंगे। दरअसल, पहाड़ों के बीच सीटी की धुन गूंजती है, जिसके कारण लोगों को बुलाने के लिए लोग सीटी बजाकर एक-दूसरे को बुलाते हैं। ताकि, दूर तक आवाज गूंज जाए और उन्हें सुनाई पड़ जाए। यहां पर लोगों के नाम भी होते हैं, जो दस्तावेजों में लिखे जाते हैं। हालांकि, आमतौर पर उन्हें बुलाने के लिए सीटी का इस्तेमाल होता है। इसके पीछे का कारण बेहद दिलचस्प है।

इस रहस्यमयी जगह पर लोग आत्माओं से करते हैं बात

न्यूयार्क। वर्तमान समय में अगर कोई कहे कि वो आत्माओं से बात करता है, तो क्या आप इस बात पर विश्वास करेंगे। यकीनन कोई नहीं मानेगा, क्योंकि दुनिया में अंधविश्वास इतना ज्यादा बढ़ गया है कि कोई अगर सच भी कहे तो उस पर यकीन करना मुश्किल होगा, लेकिन आज हम आपको एक ऐसे शहर के बारे में बताएंगे, जहां 1-2 लोग नहीं बल्कि वहां की आधी आबादी आत्माओं से बातें करती है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, अमेरिका का कासाडागा टाउन दुनिया के सबसे अजीबोगरीब शहरों में से एक है। इस शहर को 'साइकिक कैपिटल' के नाम से भी जाना जाता है। कहा जाता है कि यहां रहने वाले ज्यादातर लोग मनोविज्ञान के जानकार हैं और वो मरे हुए लोगों की आत्माओं से बातें करने का दावा करते हैं। इस टाउन को न्यूयॉर्क के आध्यात्मिक गुरु जॉर्ज कॉल्बी ने साल 1875 में बसाया था। पहले यहां बहुत कम लोग थे, लेकिन बाद में धीरे-धीरे यहां दूसरे शहरों से भी लोग आकर बसने लगे और वो खुद भी आध्यात्मिक गुरु बन गए। वर्तमान समय में दर्जनों आध्यात्मिक गुरु हैं, जो आत्माओं से बातें करने का दावा करते हैं। उनका कहना है कि उनके अंदर ऐसी शक्ति मौजूद है, जिससे वह माध्यम बनकर या अन्य तरीकों से परलोक गए व्यक्तियों की आत्माओं से संपर्क कर सकते हैं। कहा जाता है कि हर साल यहां हजारों लोग बुरी आत्माओं से मुक्ति पाने के लिए आते हैं। इस शहर की अर्थव्यवस्था का ये एक प्रमुख आधार भी है। यहां के आध्यात्मिक गुरु दावा करते हैं कि वो टैरो कार्ड्स और हस्तरेखाओं को पढ़कर आत्माओं से संपर्क करते हैं।

आज रात धरती के बेहद करीब होगा चांद

नई दिल्ली। नए साल के शुरुआत में ही आपको आसमान में खास नजारा दिखने वाला है। 3 जनवरी को साल 2026 का पहला फुल मून दिखाई देगा। इसे वुल्फ मून कहा जाता है। यह लगातार चौथा सुपरमून होगा। इससे पहले अक्टूबर में हार्वेस्ट मून, नवंबर में बीवर मून और दिसंबर में कोल्ड मून सुपरमून के रूप में नजर आ चुके हैं। सुपरमून यानी आसमान में दिखने वाला चांद सामान्य से ज्यादा बड़ा और ज्यादा चमकदार दिखाई देगा। अगर मौसम साफ रहा तो यूके में लोग इस

क्या होता है सुपरमून

चांद जब धरती के सबसे करीब होता है और उसी समय पूर्णिमा होती है। उसे सुपरमून कहा जाता है। चांद की धरती के चारों ओर

घूमने की दूरी हर समय बराबर नहीं रहती है। जब यह करीब होता है तो दूरी लगभग 3 लाख 54 हजार किलोमीटर होती है। वहीं, जब दूर होता है तो करीब 402,336 किलोमीटर होती है। इसी वजह से सुपरमून के समय चांद ज्यादा बड़ा और ज्यादा चमकदार दिखता है। आमतौर पर साल में तीन या चार सुपरमून होते हैं, लेकिन चार सुपरमून लगातार आना थोड़ा खास माना जाता है।

2026 में 12 नहीं,13 बार दिखेगा फुल मून!

वुल्फ मून नाम क्यों पड़ा

पुराने समय में जब कैलेंडर नहीं होते थे, लोग मौसम और समय पहचानने के लिए चांद के नाम रखते थे। हर फुल मून का एक अलग नाम होता था। जैसे हार्वेस्ट मून, फ्लावर मून या हंटर मून आदि। जनवरी के फुल मून को वुल्फ मून कहा जाता है। माना जाता है कि सर्दियों में भेड़ियों की आवाजें ज्यादा सुनाई देती थीं, इसलिए ही यही नाम पड़ा होगा।

कब और कहां दिखेगा चांद

वुल्फ सुपरमून शनिवार यानी 3 जनवरी को आसमान में दिखाई देगा। भारतीय समयानुसार यह 4 जनवरी रविवार की सुबह 3 बजकर 33 मिनट पर पूरी तरह गोल दिखेगा। बता दें कि चांद पूरी रात दिखेगा ,लेकिन यह सबसे खूबसूरत तब लगता है जब यह शाम के समय क्षितिज के पास उगेगा। ब्रिटेन के अलग-अलग शहरों में इसके उगने का समय दोपहर 3 बजे से शाम 4 बजे के बीच रहेगा।

2026 क्यों है खास साल

साल 2026 इसलिए भी खास है क्योंकि इस साल 12 की जगह 13 फुल मून होने वाले हैं। मई महीने में दो बार पूर्णिमा पड़ेगी जिसे ब्लू मून कहा जाता है। इसी से 'ईद का चांद होना' वाला मुहावरा जुड़ा है। इसके अलावा नवंबर और दिसंबर में भी सुपरमून देखने को यह मिलने वाले हैं।

कैसा रहेगा मौसम

यूके में ज्यादातर तो आसमान साफ रहने की उम्मीद है। लोग वुल्फ मून देख सकेंगे। हालांकि नॉर्दर्न स्कॉटलैंड, पूर्वी इंग्लैंड और वेल्स के कुछ हिस्सों में बादल और बर्फबारी भी हो सकती है। तेज ठंडी हवा चल सकता है साथ ही शाम होते तापमान शून्य से नीचे जा सकता है।

चीन में आलू-टमाटर की तरह बिक रही चांदी, सड़कों पर रेहड़ी लगा रहे लोग

बीजिंग। जहां हर रोज सोने-चांदी की चमक आम बात हो, वहीं अगर 15 किलो की एक सिल्वर स्लैब सामने आ जाए, तो भीड़ का ठहरना तो बनता है। चीन के सबसे बड़े गोल्ड-ज्वेलरी हब शुइबेई से आई ये झलक इन दिनों सोशल मीडिया पर लोगों का खूब ध्यान खींच रही है। शेन्जेन के लुओहु डिस्ट्रिक्ट में बसा शुइबेई इलाका, चीन का सबसे बड़ा गोल्ड और ज्वेलरी हब माना जाता है। यहां हर दिन टन के हिसाब से सोना और चांदी खरीदी-बेची जाती है, लेकिन हाल ही में यहां बिक रही 15 किलो वजन की एसजीई सिल्वर स्लैब ने सबका ध्यान अपनी तरफ खींच लिया।

चीन के सबसे बड़े ज्वेलरी बाजार में 15 किलो की चांदी

चीन का सबसे बड़ा गोल्ड-सिल्वर ट्रेड हब

शुइबेई इलाका, शेन्जेन के लुओहु डिस्ट्रिक्ट में स्थित है और इसे चीन का सबसे बड़ा सोना और आभूषण व्यापार केंद्र माना जाता है। देशभर के ज्वेलरी मैन्युफैक्चरर्स, होलसेल ट्रेडर्स और निवेशक यहीं से सोना-चांदी खरीदते हैं। यहां रोजाना बड़े पैमाने पर फिजिकल सिल्वर और गोल्ड की खरीद-बिक्री होती है, जिसमें भारी वजन की स्लैब्स का दिखना असामान्य नहीं, लेकिन आम लोगों के लिए ये दृश्य चौंकाने वाला जरूर होता है।

एसजीई सिल्वर स्लैब क्या होती है?

एसजीई का मतलब है शंघाई गोल्ड एक्सचेंज चीन की आधिकारिक और रेगुलेटेड कमोडिटी एक्सचें। एसजीई सिल्वर स्लैब एक तय शुद्धता (आमतौर पर 99.9%) की चांदी होती है।

पत्थर खाकर जिंदा रहता था ये जीव! रेगिस्तानी चट्टानों में मिली सुरंगों ने खोल दिया राज

बर्लिन। रेगिस्तान में चट्टानों के अंदर वैज्ञानिकों को सुरंगें मिली हैं। जिन्हें देखकर वे खुद हैरान रह गए हैं। ये सुरंगें इतनी छोटी हैं कि आंखों से सीधे दिखती भी नहीं। इन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। वैज्ञानिकों का मानना है कि ये सुरंगें किसी ऐसे सूक्ष्म जीव ने बनाई होंगी, जो अब इस दुनिया में मौजूद ही नहीं है। नामीबिया, ओमान और सऊदी अरब के रेगिस्तानी इलाकों में चूना पत्थर और संगमरमर की चट्टानों के अंदर ये अजीब सुरंगें पाई गई हैं। ये सुरंगें जमीन की सतह पर नजर नहीं आतीं हैं। चट्टानों को काटने पर इनके साफ निशान दिखते हैं। वैज्ञानिकों की रिसर्च अब इस ओर इशारा कर रही है कि कभी धरती के अंदर ऐसी जिंदगी रही होगी जो पत्थर को ही खाकर जिंदा थी।

पहली बार कैसे हुई खोज

15 साल पहले जर्मनी की जोहान्स गुटेनबर्ग यूनिवर्सिटी के भूवैज्ञानिक सीस पास्कियर ने रेगिस्तान की संगमरमर चट्टानों में पतली-पतली सीधी लकीरें देखीं थीं। जांच में पता चला कि ये लकीरें असल में बहुत छोटी सुरंगें हैं। चौड़ाई करीब आधा मिलीमीटर। गहराई तीन सेंटीमीटर तक है। ऐसी ही संरचनाएं दूसरे रेगिस्तानी इलाकों में भी पाई गईं।

क्यों हैरान हुए वैज्ञानिक

वैज्ञानिक इसलिए हैरान हैं, क्योंकि ये सुरंगें न तो टूट-फूट से बनी लगती हैं। न ही किसी प्राकृतिक दबाव का नतीजा हैं। हर सुरंग सीधी खड़ी हैं। एक जैसी दूरी पर है। एक तय गहराई तक ही जाती है। ये अक्सर चट्टानों की दरारों से शुरू होती हैं, जैसे किसी ने कमजोर जगह देखकर वहीं से काम शुरू किया हो।

जीवन के होने के संकेत

रिसर्चर्स ने पहले यह जांचा कि कहीं ये पानी, हवा या जमीन के हिलने से तो नहीं बनीं हैं। सभी गैर-जीव कारणों को खारिज कर दिया गया। इसके बाद वैज्ञानिकों को शक हुआ कि इसका कारण कोई जीव हो सकता है। सीस पास्कियर का कहना है कि अभी तक पता नहीं चल पाया है कि यह कौन सा जीव था।

सुरंगों के अंदर क्या मिला

सुरंगों के अंदर एक पतली परत मिली है। वह आसपास की चट्टान से अलग थी। इसमें लोहे, मैंगनीज और कुछ दूसरे तत्व बहुत कम मात्रा में थे। इससे साफ हुआ कि यह किसी चुनिंदा प्रोसेस का नतीजा है। इसके अलावा कार्बन और ऑक्सीजन के निशान भी अलग तरह के मिले हैं, जो बताते हैं कि यहां कभी जैविक गतिविधि हुई थी।

पत्थर खाने वाला जीव

रमन स्पेक्ट्रोस्कोपी नाम की जांच में सुरंगों के अंदर जले हुए जैविक कणों के निशान पाए गए हैं। साथ ही फॉस्फोरस और सल्फर भी पाए गए। यह आमतौर पर जीवों की कोशिकाओं में होते हैं। वैज्ञानिकों का मानना है कि यह जीव पत्थर को घोलने वाले अम्ल छोड़ता था और आगे बढ़ता जाता था। बता दें कि इन सुरंगों की सबसे हैरान करने वाली बात इनका पैटर्न है। कोई भी सुरंग दूसरी को काटती नहीं है। सब एक-दूसरे से दूरी बनाकर चलती हैं। इससे लगता है कि ये सूक्ष्म जीव किसी तरह आसपास के माहौल को महसूस कर रहे थे। पहले से बनी जगहों से बचते थे। वहीं, कुछ सुरंगों में परत-दर-परत जमा हुआ मलबा भी मिला है। यह पेड़ों के छल्लों जैसा दिखता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि यह मौसम के बदलने या नमी में फर्क का संकेत हो सकता है। इससे लगता है कि यह जीव लंबे समय तक यहां मौजूद रहा होगा। हालांकि, अब वैज्ञानिकों का कहना है कि यह खोज सिर्फ एक रहस्य नहीं, बल्कि धरती के पुराने इतिहास की झलक है। इससे यह समझने में मदद मिल सकती है कि जीवन किस तरह चट्टानों और धरती की बनावट को बदल सकता है।

दुनिया के वो 5 देश, जहां सोने से भरी हैं खदान

नई दिल्ली। इस समय दुनिया में सोने के दाम आसमान छू रहे हैं। भारत में तो लोग सोने में इन्वेस्ट करना काफी पसंद करते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि दुनिया में वो पांच देश कौन से हैं, जहां सबसे अधिक सोने की खदानें हैं? क्या इसमें भारत भी शामिल है? अगर नहीं तो भारत में इतना सोना आखिर आता कहां से है?

चीन

दुनिया का सबसे बड़ा गोल्ड प्रोड्यूसर है। चीन 2024 में 380 टन (कुछ रिपोर्ट्स में 370-380 एमटी) सोना निकालकर लिस्ट में टॉप पर है। शानदोंग , हेनान और भीतरी मंगोलिया जैसे प्रांतों में बड़ी-बड़ी सोने की खदानें हैं। सख्त एनवायरनमेंट रूल्स से छोटी माइंस बंद हो गई है, लेकिन बड़ी कंपनियां मर्जर से और एफिशिएंट हो गईं हैं। चीन घरेलू डिमांड (ज्वेलरी, टेक्नोलॉजी) पूरी करता है और एक्सपोर्ट भी करता है।

रूस

सैंक्शंस के बावजूद रूस नंबर 2 पर है। रूस ने 2024 में 310-330 टन सोना निकाला, खासकर साइबेरिया की ओलंपियाड जैसी जायंट माइंस से। रूस-यूक्रेन क्राइसिस और सैंक्शंस के बाद भी स्टेट-बैक्ड कंपनियां नॉन-वेस्टर्न मार्केट्स पर फोकस कर रही है। हार्श वेदर में भी वर्टिकल इंटीग्रेशन से प्रोडक्शन स्टेबल है।

कनाडा: इन्वेस्टर-फ्रेंडली और ईएसजी स्टैंडर्ड्स इस देश में माइनिंग को आसान बनाती है। कनाडा ने 200 टन के करीब सोना निकाला सिर्फ ओंटारियो, क्यूबेक और ब्रिटिश कोलंबिया से। मजबूत पॉलिसी, अच्छी जियोलॉजी और एक्सप्लोरेशन से रिजर्व्स बढ़ रहे हैं। ये देश ग्लोबल एक्सपोर्ट में मजबूत है।

ऑस्ट्रेलिया

ये देश ओपन-पिट माइंस का बादशाह है। ऑस्ट्रेलिया ने 290-300 टन सोना प्रोड्यूस किया। है। बोडिंगटन और कैडिया जैसी ओपन-पिट माइंस दुनिया की सबसे माइंस है। यूएसजीएस के मुताबिक यहां दुनिया के सबसे बड़े रिजर्व्स हैं। स्टेबल रूल्स, अच्छी इंफ्रास्ट्रक्चर और एक्सप्लोरेशन से ये टॉप 3 में बना हुआ है।

अमेरिका

इस देश में गोल्ड माइनिंग में नेवादा का दबदबा है। अमेरिका ने 160-170 टन सोना प्रोड्यूस किया, जिसमें नेवादा का 75% हिस्सा है। अलास्का भी इसमें अहम योगदान देता है। बड़ी कंपनियां लॉन्ग-लाइफ माइंस चलाती हैं। रिफाइनिंग और एक्सपोर्ट भी बेहद मजबूत है।